एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

श्वान (कुत्तो) के लिए खीस (कोलोस्ट्रम) के फायदे

(*डॉ. अजय नायक[1], डॉ. आशीष मीणा[2] एवं डॉ. रितेश लिम्बात[2])

[1]सहायक प्राध्यापक, लाइवस्टोक प्रोडक्शन मेनेजमेंट

[2]सहायक प्राध्यापक, पशुचिकित्सा रोग विज्ञान

(एम्. बी वेटेरिनरी कोलेज, डूंगरपुर, राजस्थान)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: aj835709@gmail.com

खीस (कोलोस्ट्रम) मवेशी के बछड़े जन्म के बाद पहले कुछ दिनों के दौरान उत्पादित दूध है और इसमें उच्च स्तर के इम्युनोग्लोबुलिनए रोगाणुरोधी पेप्टाइड्स और विकास कारक होते हैं। कोलोस्ट्रम नवजात बछड़े की वृद्धिए विकास और प्रतिरक्षा रक्षा में सहायता के लिए महत्वपूर्ण है। कोलोस्ट्रम को स्वाभाविक रूप से एक संयोजन में पैक किया जाता है जो इसके विनाश को रोकने और जैव सक्रियता को बनाए रखने में मदद करता है जब तक कि यह अधिक दूरस्थ आंत क्षेत्रों तक नहीं पहुंचता है और इसके भीतर मौजूद सुरक्षात्मक और पुनर्योजी एजेंटों के बीच सहक्रियात्मक प्रतिक्रियाओं को सक्षम बनाता है।

मवेशीओ के खीस का उपयोग सैकड़ों वर्षों से विभिन्न प्रकार की बीमारियों के लिए पारंपरिक या पूरक चिकित्सा के रूप में और पशु चिकित्सा अभ्यास में किया जाता रहा है। आंशिक रूप से मानक पश्चिमी दवाओं के दुष्प्रभावों के बारे में चिंताओं के कारणए प्राकृतिक आधारित उत्पादों के उपयोग में रुचि है जिसका खीस एक प्रमुख उदाहरण है। कई प्रीक्लिनिकल और क्लिनिकल अध्ययनों ने कई प्रकार के संकेतों के लिए गोजातीय खीस के चिकित्सीय लाभों का प्रदर्शन किया हैए जिसमें गंभीर स्थितियों का उपचार और पशुपालन शामिल हैं।

गौ वंश का अमूल्य खीस के ऊपर किये गए कई प्रकार के अध्यन से पता चला है की ये नवजात बछड़े की रोग प्रतिकारक शक्ति को बढावा देता है। उसके साथ कुत्तो में चलती बिमारिओ के लिए भी एक बहोत बड़ा अभिगम है।

कुतो में ज्यादातर गंभीर बीमारी में कैनाइन डिस्टेम्पर, पार्वो वायरस और रेब्बिस है उसमे से खीस का खास करे उपयोग कैनाइन डिस्टेम्पर में बहुत अच्छा परिणाम देता है।

कैनाइन डिस्टेंपर कुत्तों की एक अत्यधिक संक्रामक, प्रणालीगत, वायरल बीमारी है जो दुनिया भर में होती है। कुत्ते आमतौर पर प्रणालीगत नैदानिक लक्षण (बुखार, सुस्ती, भूख न लगना), श्वसन संकेत (नाक से स्राव, निमोनिया), और दस्त प्रदर्शित करते हैं। इसके बाद न्यूरोलॉजिकल संकेत (मांसपेशियों में मरोड़,फोकल या सामान्यीकृत दौरे) दिखाई देते हैं।

ये बीमारी में खीस का बहुत उत्तम काम है

पेट की आंत में जखम: कुत्तों में लीकी आंत तब होती है जब आंत की परत क्षतिग्रस्त हो जाती है। उसके वातावरण में मौजूद दवाएं या अन्य विषाक्त पदार्थ ऐसा कर सकते हैं। एक बार क्षतिग्रस्त होने पर बिना पचे भोजन के कण अस्तर से गुजर सकते हैं और रक्तप्रवाह में मिल सकते हैं। ये आक्रमणकारी एलर्जी से लेकर पाचन संबंधी समस्याओं और गठिया जैसी समस्याएं पैदा कर सकते हैं।

अध्ययनों से पता चलता है कि कोलोस्ट्रम लीक हुई आंत को ठीक करने में मदद कर सकता है। और लैक्टोफेरिन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सूजन को प्रबंधित करने में मदद करता है और स्वस्थ आंत बैक्टीरिया को "फ़ीड" करने के लिए प्रीबायोटिक के रूप में कार्य करता है।

दस्त: कुत्तो में जीतनी भी बीमारी होती है उसमे सबसे ज्यादातर बीमारी में दस्त होते हे दस्त में आंतो के अन्दर की परत पर जख्म एवं बेक्टेरिया का संक्रम बढता है अध्ययनों से पता चलता है कि यह कई प्रकार के दस्त को कम करने में मदद कर सकता है। इसमें दीर्घकालिक एवं तीव्र और यहां तक कि संक्रामक दस्त भी शामिल है। कोलोकोलोस्ट्रम ने दूध छुड़ा चुके पिल्लों की मल गुणवत्ता में सुधार किया।

त्वचा संबंधी समस्याएं: त्वचा की मरम्मत और घाव भरने में तेजी लाने के लिए तव्चा बाहरी परत पर कोलोस्ट्रम का उपयोग कर सकते हैं। इसके जीवाणुरोधी प्रभाव त्वचा संक्रमण में भी मदद कर सकते हैं। कोलोस्ट्रम को डिस्टिल पानी में मिलाकर पेस्ट बनाएं और इसे समस्याओं पर लगाएं...

- त्वचा संक्रमण
- घाव (सर्जिकल घावों सहित)
- कीड़े का काटना
- फोड़े
- गर्म स्थान
- चकत्ते
- कान के संक्रमण
- अल्सर